होलोकॉस्ट म्यूज़ियम
म्यूज़ियम

प्रलय संग्रहालय

ब्रेंडा हौगेन

होलोकॉस्ट म्यूज़ियम

प्रलय संग्रहालय

ब्रेंडा हौगेन

हमें याद है

हालांकि 22 अप्रैल 1993, एक काला-सियाह दिन था, फिर भी हजारों मेहमान एक ऐतिहासिक घटना का हिस्सा बनने के लिए उस दिन कड़ी ठंड में खड़े थे. वे उस समय, उस स्थान पर होने के लिए शायद और भी असुविधा सहने को तैयार होते.
वो यूनाइटेड स्टेट्स होलोकॉस्ट मेमोरियल म्यूजियम के समर्पण का अवसर था. जो लोग मर चुके थे और जो बचे थे उनका सम्मान करने के लिए सभी दर्शक वहां इकट्ठे हुए थे.

उद्घाटन समारोह में अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन सहित कई सम्मानित अतिथि और विश्व नेता शामिल हुए. अपने भाषण में, क्लिंटन ने दर्शकों को याद दिलाया कि "यह संग्रहालय अकेले मृतकों के लिए नहीं है, वो उन बचे लोगों के लिए भी नहीं है जिन्हें इतनी खूबसूरती से संग्रहालय में दर्शाया गया है. यह संग्रहालय शायद सबसे ज़्यादा उन लोगों के लिए है जो वहां बिल्कुल थे ही नहीं. यहाँ पर सीखने के लिए और अपनी मानवता को गहरा करने के लिए हमारे लिए कई सबक हैं."

भाषण समाप्त होने के बाद भीड़ दरवाजे से घुसी और फिर अतीत में खो गई. होलोकॉस्ट में बचे लोगों के लिए, वो अनुभव भय, हानि और निराशा के काल में पीछे जाना था. उन लोगों के लिए जिन्हें प्रलय का कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं था, उनके लिए यह मानव इतिहास के सबसे क्रूर कालखंडों में से एक कदम था.

(अमेरिका के होलोकॉस्ट काउंसिल के अध्यक्ष बड मेयरहोफ, राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और परिषद के संस्थापक अध्यक्ष एली विज़ेल ने समर्पण पर एक शाश्वत ज्योति जलाई.)

होलोकॉस्ट में लोगों द्वारा उपयोग की गयीं रोजमर्रा की वस्तुओं के ढेर भी थे जो प्रदर्शनी का हिस्सा थे: टूथब्रश, हेयरब्रश, छतरियां और जूते.
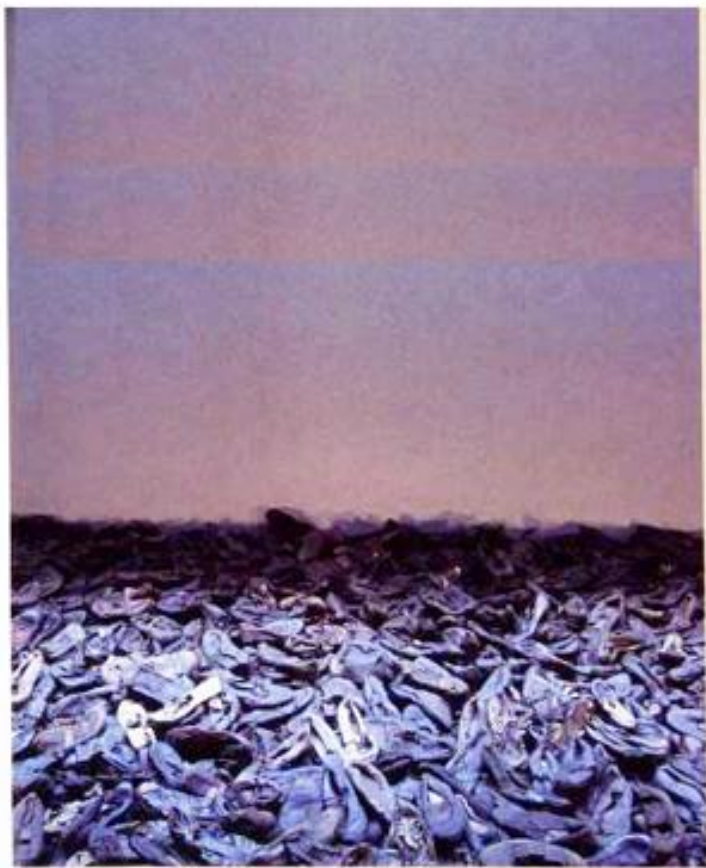
(संग्रहालय में आने वाले लोग अक्सर जूतों के ढेर को, सबसे यादगार प्रदर्शनी के रूप में याद करते हैं.)

इन सामान्य प्रतीत होने वाली वस्तुओं का महत्व इसलिए था क्योंकि वे मृतकों का प्रतिनिधित्व करती थीं. उन टूथब्रुशों ने अनगिनत मारी गई दादी और दादाओं के बारे में बताया. हेयरब्रुश, महिलाओं के बाल बांधने की यादें वापस लाए. क्या छाते उन आदमियों के थे जो खराब मौसम से चिंतित थे? सबसे अधिक कहानियां जूतों ने सुनाईं. कामगारों के जूते, महिलाओं की सैंडिल, बैंकरों के महंगे जूते, और बच्चों के कपड़े के जूते आदि. कुछ जूतों की एड़ियां घिसी और टूटी थीं. प्रलय पीड़ितों की लंबी सूची में प्रत्येक जूतों की जोड़ी, किसी-न-किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती थी.

उस दिन संग्रहालय, मेहमानों के अंतःकरण की शक्तिशाली भावनाओं को सामने लाया. कुछ लोग देखने के बाद हांफने लगे. कुछ रोने लगे. कुछ चुपचाप कमरों में ग़मगीन होकर चलते रहे. हर कोई संग्रहालय के मुख्य लक्ष्य को समझता था: "मृत और जीवित लोगों, दोनों के लिए हमें गवाह होना चाहिए."

होलोकॉस्ट (प्रलय) क्या था?

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) में जर्मनी और ऑस्ट्रिया-हंगरी ने मिलकर फ्रांस, रूस, ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका और उनके सहयोगियों के साथ लड़ाई की. युद्ध में जब जर्मनी की हार हुई, तो उस देश को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा.

(1920 के दशक की शुरुआत में जर्मन करेंसी लगभग कूड़ा हो गई थी. जलाऊ लकड़ी खरीदने की बजाए जर्मनी में कागज़ के नोटों को जलाना ज़्यादा सस्ता था.)

युद्ध के कारण कर्ज बढ़ा और जर्मनी अपने क़र्ज़ को चुका नहीं पाया. देश की अर्थव्यवस्था चरमराने लगी और जर्मनी की करेंसी एकदम बैठ गई. फिर जर्मन लोग अपनी समस्याओं के लिए किसी "अन्य" को दोषी ठहराने लगे. उन्हें कोई आकर बचाए, वो उसकी भी तलाश करने लगे.

नेशनल सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य जिन्हें नाज़ी कहा जाता है, जातीय पृष्ठभूमि पर ध्यान केंद्रित करके जर्मन गौरव को बढ़ाना चाहते थे. उनके अनुसार एक सच्चा जर्मन, एक आर्य था - एक शुद्ध खून वाला जर्मन, जिसके सुनहरे बाल और नीली आँखें हों. नाजियों को लगा कि जर्मनी में केवल शुद्ध आर्य लोगों को ही रहने की इज़ाज़त होनी चाहिए. वे अन्य पृष्ठभूमि के लोगों, मुख्य रूप से यहूदी नस्ल के लोगों को हीन मानते थे. इसलिए जर्मनी ने अपने सामने खड़ी समस्याओं के लिए यहूदियों को दोषी ठहराया. कई जर्मन भी, नाजियों की विचारधारा से सहमत थे और वे मानते थे कि नाज़ी नेता एडॉल्फ हिटलर ही उनका मुक्तिदाता हो सकता था.

जर्मनी के भीतर कई विविध समूह थे: कैथोलिक, लूथरन, यहूदी आदि. वहां ईसाई समूह बहुमत में थे और यहूदी अल्पसंख्यक थे. नाजी पार्टी मानती थी कि अगर वो जर्मनी के सभी यहूदियों से छुटकारा पा लेगी, तो उससे देश को शक्ति और सम्मान मिलेगा. जर्मनी को यहूदियों से मुक्त कराने की नाजी योजना को "अंतिम हल" कहा गया. वर्षों बाद उसे प्रलय या “होलोकॉस्ट” कहा गया.

प्रलय के दौरान लगभग 60 लाख यहूदियों की हत्या की गई, लेकिन वे अकेले पीड़ित नहीं थे. अन्य 50 लाख लोग - पोलिश, जिप्सी (खानाबदोश), राजनीतिक कैदी, और वे लोग जिन्हें जर्मन सरकार अवांछनीय समझती थी - भी मारे गए. कुछ पीड़ितों की हत्या जहरीली गैस से की गई, कुछ की गोली मारकर, और कुछ को भूख से मारा गया.

होलोकॉस्ट रातों-रात नहीं हुआ. वो एडॉल्फ हिटलर की सत्ता में वृद्धि के साथ शुरू हुआ और धीरे-धीरे बढ़ता रहा. 1933 में जब हिटलर, जर्मनी का नया चांसलर या नेता बना, तो उसने जर्मन लोगों को बेहतर भविष्य की आशा दिलाई.

एडोल्फ हिटलर
(1899-1945)

हिटलर जल्द ही वो बदलाव लाया जिससे वो और शक्तिशाली बना. उसने जर्मन लोगों को आश्वस्त किया कि गरीबी और दुख से बाहर निकलने के लिए उनके देश को अधिक नियंत्रण की जरूरत होगी. जर्मनी के लोग हिटलर को देश बदलने का मौका देना चाहते थे. जब हिटलर ने प्रेस और राजनीतिक बैठकों पर अपना कब्ज़ा जमाया तब अन्य जर्मन नेता चुप रहे.

(जैसे-जैसे हिटलर के राजनैतिक आंदोलन की लोकप्रियता बढ़ी वैसे-वैसे सभी उम्र के जर्मन नागरिकों ने उसे नाजी सलामी दी.)

जैसे-जैसे हिटलर की शक्ति बढ़ती गई, वैसे-वैसे नाज़ी पार्टी भी बढ़ती गई. नेता बनने के तीन महीनों के अंदर ही हिटलर ने सरकार ने पूरे शासन पर कब्ज़ा कर लिया. उसके पास एक तानाशाह की पूरी शक्तियाँ थीं. उसने गेस्टापो नामक एक गुप्त पुलिस बल गठित किया, जो आम नागरिकों पर जासूसी करता था. हिटलर ने अपनी सरकार का विरोध करने वाले व्यक्तियों को सजा देने के लिए शिविर जेल बनाए. उसने अपने शुद्ध "आर्य" समुदाय के सपने को साकार करने की तैयारी की.

1 अप्रैल, 1933 को हिटलर की सरकार ने यहूदी बिज़निस (धंधों) के बहिष्कार की घोषणा की. कुछ दिनों बाद, जर्मन सरकार ने जर्मनी में यहूदियों के रहने और काम करने की क्षमता को सीमित करने के लिए पहला क़ानून पारित किया. यहूदी, अब वहाँ जमीन के मालिक नहीं बन सकते थे न ही अखबार के संपादक बन सकते थे. उन्हें राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा नहीं मिल सकता था और वे सेना में भर्ती नहीं हो सकते थे.

उसी समय हिटलर ने अन्य लोगों को भी सताने की कोशिश की जिन्हें उसने अवांछनीय करार दिया. 24 नवंबर, 1933 को, आदतन और खतरनाक अपराधियों के खिलाफ कानून ने भिखारियों, बेरोजगार श्रमिकों, शराबियों, बेघर लोगों और राजनीतिक दुश्मनों को यातना शिविरों में भेजने की अनुमति दे दी. यह जर्मनी को, गैर-आर्यों से मुक्त कराने की दिशा में एक और कदम था. 1938 तक, यहूदी डॉक्टर गैर-यहूदी रोगियों का इलाज नहीं कर सकते थे, न ही यहूदी अकाउंटेंट या दंत चिकित्सक के रूप में काम कर सकते थे.

(बर्लिन में एक यहूदी दुकान की खिड़की पर लगा बोर्ड, "जर्मन लोग अपना बचाव करें! यहूदियों से माल नहीं खरीदें!)

यहूदियों को सरकार के पास पंजीकरण कराना, अपनी संपत्ति, माल और धन को सूचीबद्ध करना और 15 साल से अधिक उम्र के यहूदियों के लिए पहचान-पत्र अनिवार्य बना.

कई पोलिश-यहूदी, जर्मनी में रहते थे लेकिन वे वहां के नागरिक नहीं थे. नाज़ी, जर्मनी को केवल जर्मन लोगों के लिए ही चाहते थे. सितंबर 1938 में, 17,000 पोलिश-यहूदियों को जर्मनी छोड़ने के लिए मजबूर किया गया. अक्टूबर में, पुलिस ने ट्रेनों में भरकर यहूदियों को पोलिश सीमा पर भेजा. पोलिश सरकार ने उन्हें देश में प्रवेश करने से रोका. पोलैंड इतनी बड़ी संख्या में लोगों को लेने के लिए तैयार नहीं था.

(जर्मन सीमा पर ज़बोंज़िन, पोलैंड के पास हज़ारों यहूदी फंसे हुए थे.)

क्योंकि वे और कहीं नहीं जा सकते थे इसलिए यहूदियों ने पोलैंड और जर्मनी के बीच के ठंडे सीमा क्षेत्र में, तम्बू बनाकर शिविरों में रहना शुरू किया.

निष्कासित किए जाने वालों में हर्शल ग्रिंज़पैन के माता-पिता भी शामिल थे. उस समय, ग्रिंज़पैन, पेरिस, फ्रांस में रह रहा था. अपने माता-पिता के इलाज को लेकर जर्मन सरकार पर अपनी नाराजगी व्यक्त करने के लिए ग्रिंज़पैन ने पेरिस में जर्मनी के दूतावास में एक अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी.

इस हत्याकांड का बदला लेने के लिए हिटलर के सलाहकारों ने यहूदियों पर हमला करने के लिए गुंडों के गिरोहों को भेजा. उन्होंने पूरे जर्मनी में यहूदी घरों, उनके धंधों और सभाओं को नष्ट कर डाला. इस घटना, जिसे "क्रिस्टलनाचट", या "नाईट ऑफ ब्रोकन ग्लास" कहा जाता है, के परिणामस्वरूप हजारों यहूदी व्यवसायों और घरों की लूटपाट हुई और बेहद विनाश हुआ. यहूदियों पर हमला करने के लिए सड़कों पर नाजियों की भीड़ घूमती रहती थी. नाजियों द्वारा पीटे जाने से लगभग 100 यहूदी मारे गए. लगभग 30,000 यहूदी पुरुषों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें यातना-शिविरों में भेज दिया गया.

(क्रिस्टलनाचट के दौरान सैकड़ों यहूदी मंदिरों को नष्ट किया गया. बाद में नाजियों ने जर्मनी के यहूदी समुदायों को सफाई के लिए पैसे देने के लिए मजबूर किया.)

फिर 1 सितंबर 1939 को, जर्मन सेना ने पोलैंड पर आक्रमण किया. ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के नेताओं ने हिटलर को चेतावनी दी कि अगर उसने अपने पड़ोसी देश पर हमला किया तो वे पोलैंड की सहायता करेंगे. वे अपने वादे पर खरे उतरे. यूरोप, द्वितीय विश्व युद्ध में तब भड़क उठा जब ब्रिटेन, फ्रांस और अन्य देशों ने भी पोलैंड की मदद करने की कोशिश की.

पोलैंड के अंदर, जर्मन सेना ने पोलिश-यहूदियों को अपने घरों से वारसॉ और लॉड्ज़ जैसे शहरों में, घेराबंद यहूदी बस्तियों (घेट्टो) में जाने के लिए मजबूर किया. ये यहूदी बस्तियां कांटेदार तारों, ईंट की दीवारों और सशस्त्र गार्डों से घिरी हुई थीं. उन्होंने पूरे देश में यहूदियों को बंदी बनाने का काम किया. अपनी डायरी में, युवा वर्नर गैलनिक ने यहूदी बस्ती में रहने का वर्णन किया: "हमारे पास एक कमरा था - गंदा, और रसोई भी एकदम गंदी.... हमने दोनों कमरे साफ़ किए और बड़ी मुश्किल से उनमें रहे. जो कोई व्यक्ति बाहर से भोजन - रोटी, मक्खन आदि घर लाता - और यदि गार्डों को उसका पता चल जाता, तो वे उस व्यक्ति को या तो गोली मार देते, या फिर जेल में बंद करके उसे मारते-पीटते थे.”

अन्य पोलिश लोगों से अलग दिखने के लिए, नाजियों ने पोलिश यहूदियों को अपने कपड़ों पर "पीला सितारा" पहनने का आदेश दिया.

(यहूदी बस्ती में यहूदियों के आने-जाने को नियंत्रित करने के लिए नाज़ी पुलिस अक्सर नाकाबंदी करती थी.)

यहूदियों को पूरे दिन कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी, और जब वे चारदीवारी से घिरी यहूदी बस्ती में लौटते थे तो उन्हें बहुत कम भोजन और भय में जीवन बिताना पड़ता था.

इन पोलिश यहूदियों ने अपना सब कुछ खो दिया: नौकरी, स्कूल, संपत्ति, जमीन और पैसा. अन्य जर्मन शासित क्षेत्रों में, भी यहूदियों ने काफी प्रतिबंधित जीवन व्यतीत किया.

नाजियों द्वारा उत्पीड़ित लोगों ने सोचा कि उनका जीवन उससे और अधिक खराब नहीं हो सकता था. उन्हें लगा की कुछ दिन ज़ुल्म सहने के बाद फिर उनकी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी. उन्होंने ऑशविट्ज़, बुचेनवाल्ड, डचाऊ या बर्गन-बेल्सन जैसी स्थानों (यातना-शिविरों) के बारे में पहले कभी नहीं सुना था.

यातना-शिविरों का निर्माण

जैसा-जैसे द्वितीय विश्व युद्ध पूरे यूरोप और एशिया में फैला, जर्मनी को सड़कों के निर्माण और कारखानों में काम करने के लिए मज़दूरों की सख्त ज़रुरत पड़ी. सेना के लिए हवाई-जहाज, टैंक, हथियार और गोलियां उपलब्ध कराने की लागत बहुत महंगी थी. अधिकांश जर्मन पुरुष मज़दूरों ने सेना में शामिल होने के लिए अपनी नौकरियां छोड़ दी थीं जिससे कारखानों में मज़दूरों की खासी कमी हो गई थी.

(डचाऊ में कैदी, जर्मन सेना के लिए राइफल उत्पादन करते हुए.)

जर्मनी को सस्ते में, भारी मात्रा में काम करवाने की जरूरत थी. इसलिए, नाजियों ने निर्धारित किया कि उन्हें गुलामों की आवश्यकता थी. कुछ यातना-शिविरों में लोगों ने नाजियों के लिए गुलामों जैसे काम किया.

1940 के दशक की शुरुआत तक, जर्मनों ने सैकड़ों छोटे उप-शिविरों सहित 5,000 यातना-शिविर चलाए. पोलैंड में सबसे कुख्यात शिविर ऑशविट्ज़, बिरकेनौ, माजदानेक, सोबिबोर और ट्रेब्लिंका थे. जर्मन शिविरों में बुचेनवाल्ड, बर्गन-बेल्सन, डचाऊ और साक्सेनहौसेन शामिल थे. अन्य शिविर पूरे यूरोप में खोले गए. 1930 के दशक में, सबसे पहले राजनैतिक विरोधियों को यातना-शिविरों में भेजा गया. उसके बाद यहूदियों, तथाकथित अवांछनीय लोगों, पोलिश और कई अन्य समूहों को कैद किया गया. जब गेस्टापो एक परिवार के किसी सदस्य को गिरफ्तार करके ले जाता तब विरोध करना बहुत खतरनाक होता था. लोगों को नाजियों के नाराज होने का, और खुद को यातना-शिविरों में भेजे जाने का डर लगा रहता था.

जब नाज़ी पोलैंड या किसी अन्य कब्जे वाले देश में किसी यहूदी बस्ती को खाली करने का फैसला लेते तब पुलिस उस इलाके से लोगों को पकड़कर उन्हें रेल के मालगाड़ी वाले डिब्बों में भरती थी. मालगाड़ी वाले डिब्बों में न पानी या भोजन, न स्नानघर, और न ही उन्हें गर्म रखने का कोई प्रबंध होता था.

(कैदियों के साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता था और उन्हें ट्रेन के मालगाड़ी वाले डिब्बों में ढोया जाता था.)

कुछ यहूदी सूटकेस में अपना सामान भरकर लाते, जिन्हें गार्ड फौरन छीन लेते. शिविरों में पहुंचने के बाद, छोटे बच्चों और बीमारों या बुज़ुर्गों को तुरंत मृत्यु के लिए गैस-चैम्बर में ले जाया जाता. वे लोग काम नहीं कर सकते थे, और नाजियों की केवल हट्टे-कट्टे श्रम करने वाले लोगों में ही दिलचस्पी थी. वो लोगों को बिना काम किए खिलाने या उनकी देखभाल करने के लिए वहां नहीं लाए थे.

यातना-शिविरों में, यहूदियों के साथ मवेशियों की तरह बर्ताव किया जाता था. युद्ध के प्रयासों को फंड करने के लिए सभी लोगों की व्यक्तिगत संपत्ति छीनकर जर्मनी भेज दी जाती थी. शिविर के कैदियों के बाल मुंडवाए जाते और उनके शरीर को धोकर जूँ मारने की दवा स्प्रे की जाती थी.

कैदियों को भारी, मोटे सूती कपड़े के बने धारीदार कपड़े पहनने पड़ते थे. एक बैरक में महिलाएं और लड़कियां रहती थीं, दूसरे में पुरुष और लड़के. भोजन में सूखी डबलरोटी और पानी जैसा पतला सूप मिलता था - जिससे लोग हमेश भूखे रहते थे. कंटीली बाड़ और पहरेदारों के कारण भाग पाना लगभग असंभव था, और पकड़े जाने के परिणाम भयानक थे. भागने की कोशिश करते हुए पकड़े गए कैदियों को गोली मार दी जाती थी. साथ ही भागने वाले की मदद करने वाले को भी गोली मार दी जाती थी.

ऑशविट्ज़ में, सबसे बड़ा यातना-शिविर था. वहां स्थिति इतनी खराब थी कि अक्सर एक दिन में कई सौ कैदियों की मृत्यु हो जाती थी. कई यातना-शिविरों में, मौतें कुपोषण, भुखमरी, गोलीबारी, मार-पीट और बीमारी के कारण होती थीं. ऑशविट्ज़ में कैदियों की व्यवस्थित रूप से हत्या की जाती थी.

ऑशविट्ज़ में कैदियों को उनके बाएं हाथ पर पहचान संख्या को, टैटू (गोदा) जाता था. टैटू (गोदने) के कारण नाज़ी शिविर में कैदियों की मौत का सटीक रिकॉर्ड रख सकते थे. गोदने की प्रथा ने पीड़ित कैदियों को अमानवीय बना दिया था और वे खुद को जानवरों की तरह महसूस करते थे. कैदियों के हाथ पर टैटू (गोदने) के चिन्ह हमेशा के लिए अंकित रहते थे.

ऐसे गैस चैंबर बनाए गए जहां जहरीली गैस से एक बार में सैकड़ों पीड़ितों को मौत के घाट उतारा जा सकता था. लाशों को जलाने के लिए भट्टियां, गैस चैंबर्स के पास ही बनाई गईं थीं. भट्टियों का दुर्गंधयुक्त धुआं आकाश को रंग देता था.

लेखक एली विज़ेल को, 1944 में, 15 वर्ष की उम्र में, उनके परिवार के साथ ऑशविट्ज़ ले जाया गया था. उन्होंने ऑशविट्ज़ के ऊपर धुएँ से भरे आसमान का इन शब्दों में वर्णन किया:
"मैं उस रात को कभी नहीं भूलूंगा, शिविर में अपनी पहली रात....

(होलोकॉस्ट संग्रहालय की एक फोटो प्रदर्शनी में, ऑशविट्ज़ कैदियों के पहचान-चिन्ह - टैटू (गोदने) दर्शाए गए.)

1941 में, हिटलर ने यहूदियों की सामूहिक हत्या पर अपना ध्यान केंद्रित किया. नाज़ी फौज के प्रमुख हेनरिक हिमलर ने नए आदेशों के साथ ऑशविट्ज़ का दौरा किया: "फ्यूहरर (नेता) ने यहूदी प्रश्न के "अंतिम हल" का आदेश दिया है. हमारी फौज इस आदेश को पूरा करेगी. ... हमने... उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए ऑशविट्ज़ को चुना है."

इस "अंतिम हल" में गैस चैम्बर्स में यहूदियों और अन्य अवांछनीय लोगों को मारना शामिल था. इस प्रक्रिया को और आगे बढ़ाने के लिए बिरकेनौ, बेल्सन और सोबिबोर जैसे विशिष्ट विनाश-शिविर बनाए गए.

(आज ऑशविट्ज़ का एक गैस चैंबर अपने पीड़ितों के लिए एक मंदिर के रूप में कार्य करता है.)

.. मैं उस धुएं को कभी नहीं भूलूंगा. मैं उन बच्चों के छोटे-छोटे चेहरों को कभी नहीं भूलूंगा, जिनके शरीर को मैंने एक खामोश नीले आकाश के नीचे धुएं की माला में बदलते हुए देखा." बाद में विज़ेल की माँ और छोटी बहन ऑशविट्ज़ के मरने वालों में शामिल हुईं.

बिरकेनौ, ऑशविट्ज़ का एक हिस्सा था. बिरकेनौ में चार गैस चैंबर थे जो एक दिन में 8,000 लोगों की जान ले सकते थे. मरे शरीरों का अंतिम संस्कार करने के लिए डिज़ाइन की गई भट्टियां, उतनी तेज़ गति नहीं बनाए रख सकती थीं. इसलिए कई शवों को खाइयों में दबाकर सामूहिक कब्रें बनाई जाती थीं.

1941 से शुरू में कुछ जगहों पर गार्डों ने यहूदी कैदियों को, खुली खाइयों के सामने लाइन में खड़े होने का आदेश दिया. फिर उन्होंने कैदियों को मशीनगनों से भून डाला. बाद में उनके मृत शरीर सामूहिक कब्रों में गिर गए. 1942 में, द न्यू यॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार लातविया, लिथुआनिया और एस्टोनिया के 100,000 यहूदियों की इस तरह से हत्या की गई, साथ ही पोलैंड में 100,000 और संभवतः जर्मनी के कब्जे वाले रूस के हिस्से में 200,000 यहूदियों की हत्या की गई.

नाजियों ने शिविरों में भेजे गए पीड़ितों की संख्या का रिकॉर्ड रखा. बेल्सन शिविर में, लगभग 600,000 यहूदियों की हत्या की गई. जब शिविर का उपयोग ख़त्म हुआ तब नाजियों ने उसे नष्ट कर दिया, और वहां के अवशेषों को खोदकर मिट्टी में दबा दिया और अपने अपराधों के सबूत छिपाने के लिए उस ज़मीन के ऊपर पेड़ लगाए.

(मुक्ति के बाद, ब्रिटिश सैनिक ने बर्गेन-बेल्सन यातना शिविर में मृत शरीरों से भरे इस गड्ढे की खोज की.)

विनाश-शिविर शुरू होने के एक साल के अंदर दस-लाख यहूदी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की हत्या कर दी गई थी. लेकिन नाजियों के लिए वो मृत्यु दर बहुत कम थी, और इसलिए उन्होंने और अधिक मृत्यु कक्ष बनाए. भयावहता को बढ़ाने के लिए, जिन लोगों को कंक्रीट और ईंटें डालने के लिए मजबूर किया गया था उनकी बाद में उनके द्वारा बनाए गए गैस-कक्षों में ही हत्या कर दी गई.

युद्ध के अंत में

जैसे ही युद्ध का अंत निकट आया, नाजियों ने अपनी जानलेवा गतिविधियों के सभी सबूतों को मिटाने की कोशिश की. उन्होंने हरे-भरे भू-निर्माण करके कुछ यातना शिविरों को छिपाने की कोशिश की. उन्होंने गैस चेंबर्स को तोड़ डाला. उन्होंने सामूहिक कब्रें खोदीं और लाशों को जलाया. लेकिन उन्होंने जो कुछ भी किया वे फिर भी अपनी काली करतूतों के सारे रिकॉर्ड मिटा नहीं पाए.

(नाज़ी अधिकारियों ने विनाश-शिविरों में कई इमारतों को नष्ट करके युद्ध अपराधों की सजा से बचने की कोशिश की.)

कब्जे वाले देशों में दसियों हज़ार कैदियों को जर्मनी भेजा गया था. कैदियों ने उसे अंतिम मृत्यु मार्च कहा. जैसे-जैसे मित्र राष्ट्र आगे बढ़े, उन्होंने जो देखा और पाया उसे देखकर वे चौंक गए.

रूसी सेना ने जुलाई 1944 में पोलैंड में पहले यातना-शिविर, मज़्दानेक को मुक्त कराया. अमेरिकी और ब्रिटिश सैनिकों ने जो देखा वो उनके सबसे बुरे सपने से कहीं अधिक भयावह था. ज़िंदा बचे हुए लोगों में अत्यधिक भुखमरी स्पष्ट थी - पुरुष और महिलाएं जीवित कंकाल लग रहे थे. सैनिकों ने ऐसे चेहरे देखे जो हड्डी पर फैली त्वचा जैसे थे. सब तरफ गंदगी और भारी बदबू थी. अमरीकी जनरल ड्वाइट डी. आइजनहावर ने वाशिंगटन, डी.सी. में नेताओं को लिखा, "जो कुछ मैंने देखा उसका वर्णन करना बेहद मुश्किल है. ... वहां पर भुखमरी, क्रूरता और पशुता का बोलबाला था."

जीवित बचे लोगों का स्वास्थ्य नाजुक था. उन्होंने इतने लम्बे अर्से से भोजन नहीं खाया था कि वे सामान्य भोजन को पचा नहीं पा रहे थे. कुछ लोग बहुत तेज़ गति से खाने के कारण मर गए."

(कुपोषण के अलावा, कैदियों को टाइफाइड और पेचिश जैसी बीमारियों का भी सामना करना पड़ा.)

उनका शरीर भोजन को संभाल नहीं सकता था. अन्य कैदी मृत्यु के इतने निकट थे कि मुक्त होने पर भी वे जीवित नहीं बचे. लियोनार्ड बर्नी, बर्गन-बेल्सन यातना शिविर से मुक्त करने वाले ब्रिटिश सैनिकों के साथ थे. उन्होंने कहा:

"सैकड़ों, शायद हजारों, भूखे लोगों की मृत्यु इसलिए हुई क्योंकि हमने उन्हें केवल वही भोजन खिलाया जो हमारे पास था - सेना का राशन. पर उन परिस्थितियों में उसके बारे में पहले से सोच पाना बड़ा मुश्किल था."

यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध 8 मई, 1945 को जर्मनी द्वारा औपचारिक आत्मसमर्पण के बाद समाप्त हुआ. यहूदियों, पोलिश, स्लावों, जिप्सियों, समाजवादियों और नाजी योजना के अनुसार विकृत लोगों में ग्यारह मिलियन (1.1 करोड़) लोग मारे गए. यूरोप में रहने वाले सभी यहूदियों में से लगभग दो-तिहाई इस प्रलय में मारे गए. जो बच गए वे बेघर, दरिद्र, भूखे और बीमार थे. नाज़ियों के "अंतिम हल" का प्रभाव पूरे यूरोप में फैला और वो दशकों तक चला.

एक उपयुक्त स्मारक

अमेरिका में प्रलय में खोए लाखों लोगों के स्मारक पर काम शुरू होने में 30 साल से अधिक समय लगा. 1978 में, राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने प्रलय (होलोकॉस्ट) पर एक परिषद का गठन किया, जिसके अध्यक्ष एली विज़ेल थे. परिषद ने तीन कार्यों की सिफारिश की.

(27 सितंबर 1979 को अध्यक्ष एली विज़ेल (दाएं) ने होलोकॉस्ट के बारे में बात की और राष्ट्रपति कार्टर को परिषद की सिफारिशों से अवगत कराया.)

सबसे पहले उन लोगों के लिए एक स्मारक बनाया जाए जो मारे गए थे और जो ज़िंदा बचे थे. दूसरा, उन लोगों के लिए एक शिक्षा केंद्र स्थापित करना जो प्रलय के बारे में अधिक जानना चाहते थे. तीसरा, मृतकों का सम्मान करने के लिए एक राष्ट्रीय स्मरण दिवस की स्थापना करना.

अमेरिकी सरकार ने संग्रहालय के लिए वाशिंगटन, डीसी में नेशनल मॉल के पास लगभग 2 एकड़ (0.8 हेक्टेयर) भूमि दान दी. भवन निर्माण के लिए पैसा निजी दान से आया. कुल मिलाकर, संग्रहालय की लागत 168 मिलियन डॉलर थी: भवन के लिए $ 90 मिलियन और प्रदर्शनी के लिए $ 78 मिलियन. जेम्स इंगो फ्रीड, जिनका परिवार 9 साल की उम्र में नाज़ी जर्मनी छोड़कर भागा था, को परियोजना के आर्किटेक्ट के रूप में चुना गया.

अपना डिजाइन शुरू करने से पहले फ्रीड ने यूरोप के यातना और विनाश-शिविरों का दौरा किया. उनके डिजाइन ने होलोकॉस्ट संस्कृति के तीन तत्वों को आपस में जोड़ा: शेट्ल्स (पूर्वी यूरोप के यहूदी गांव), विनाश-शिविरों की वास्तुकला, और यहूदी बस्ती (घेट्टो) की दीवारें जहां वारसॉ और लॉड्ज़ जैसे स्थानों पर यहूदियों को रहने के लिए मजबूर किया गया था.

(जेम्स इंगो फ्रीड द्वारा डिजाइन किए गए संग्रहालय ने 1994 में अमेरिकन इंस्टीट्यूट और आर्किटेक्चर का पुरुस्कार जीता.)

फ्रीड का लक्ष्य था "एक ऐसी इमारत बनाना थी जो डर और उदासी के प्रस्फुटन की अनुमति दे. मुझे नहीं पता कि कोई ऐसी इमारत बनाना संभव हो. लेकिन आप संवेदनशील वास्तुकला की इमारत ज़रूर बना सकते हैं."

फ्रीड ने तीन मंजिली, एक स्थायी प्रदर्शनी की योजना बनाई. वहां पर शिक्षा, अनुसंधान केंद्र और अस्थायी प्रदर्शनियों के लिए भी जगह थी. स्मरण का एक हॉल होगा जहाँ आने वाले आगंतुक शांति से बैठकर चिंतन-मनन कर सकें.

16 अक्टूबर 1985 को, कई यातना-शिविरों की मिट्टी और राख को संग्रहालय की नींव में दबाया गया. एक साल बाद, 15 वीं स्ट्रीट, संग्रहालय स्थल के सामने की सड़क का नाम बदलकर "राउल वॉलनबर्ग प्लेस" किया गया.

(प्रलय संग्रहालय वाशिंगटन, डीसी में नेशनल मॉल के पास स्थित है.)

स्वीडिश राजनयिक वालेनबर्ग ने हजारों यहूदियों की जान बचाई. उन्होंने लोगों को दस्तावेज उपलब्ध कराए जिससे वे स्वीडन जा सके. 1988 में, राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने आधारशिला की स्थापना में भाग लिया. उसके बाद से कलाकृतियों को प्रदर्शन के लिए एकत्र किया जाने लगा.

1993 में, होलोकॉस्ट के लिए एक राष्ट्रीय स्मारक का सपना आखिरकार एक वास्तविकता बना. यूनाइटेड स्टेट्स होलोकॉस्ट मेमोरियल म्यूज़ियम में 265,000 वर्ग फुट (23,850 वर्ग मीटर) प्रदर्शनी क्षेत्रफल शामिल है - जो लगभग पाँच फुटबॉल मैदानों के बराबर है. स्थायी प्रदर्शनी, संग्रहालय का केंद्र-बिंदु है. यहाँ पर दस्तावेजों, कलाकृतियों और तस्वीरों को प्रस्तुत किया गया है जो बताते हैं कि प्रलय के दौरान क्या हुआ और वो कैसे हुआ. प्रदर्शनी को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक एक अलग मंजिल पर है: "नाजी आक्रमण", "अंतिम हल" और "अंतिम अध्याय". ऑडियो और वीडियो आगंतुकों को प्रलय के इतिहास की एक झलक देते हैं.

निचले स्तर पर, "बच्चों की टाइल की दीवार" प्रलय के दौरान मारे गए पंद्रह लाख बच्चों को याद करती है. इस दीवार को बनाने के लिए अमेरिकी बच्चों ने छोटी-छोटी टाइलों पर प्रलय के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं. स्थायी स्मारक के एक हिस्से के रूप में दीवार में 3,000 से अधिक टाइलें लगाई गई हैं.

संग्रहालय में हर साल कुछ नए विशेष प्रदर्शन प्रस्तुत किए जाते हैं.

("टॉवर ऑफ़ फेसेस" एक तीन मंजिला कमरा है जो वर्तमान लिथुआनिया के एक छोटे से गाँव के लोगों के फोटो से ढका हुआ है. इस गांव के 29 लोगों को छोड़कर बाकी सभी ग्रामीणों को प्रलय में मार दिया गया था.)

एक प्रदर्शनी नीदरलैंड के एम्स्टर्डम में एक यहूदी लड़की ऐनी फ्रैंक के बारे में है, जो नाजियों द्वारा खोजे जाने से बचने के लिए कई वर्षों तक एक अटारी में छिपी रही. द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद, ऐनी की डायरी मिली, जिसमें उसके वर्षों के छिपने की कहानी बताई गई थी. अन्य छिपे हुए बच्चों पर केंद्रित एक अन्य शक्तिशाली प्रदर्शनी है.

(कई आगंतुक संग्रहालय का अनुभव करने के बाद दुःख और उदासी से अभिभूत हो जाते हैं.)

दोस्तों और अजनबियों ने समान रूप से यहूदियों की रक्षा करने और उन्हें नाजियों से छिपाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली थी. उनमें से कई बच्चे पकड़े जाने या मारे जाने से बचने के लिए तहखानों या भूमिगत कोठरियों में रहते थे.

पहले 14 वर्षों में, 2-करोड़ 40-लाख से अधिक लोगों ने संग्रहालय का दौरा किया और प्रलय पीड़ितों की पीड़ा के बारे में जाना. उन मेहमानों में लगभग 80-लाख स्कूली बच्चे थे. मेहमानों में 1-करोड़ 70-लाख से अधिक लोग गैर-यहूदी थे.

कभी नहीं भूलना

यूनाइटेड स्टेट्स होलोकॉस्ट मेमोरियल संग्रहालय निरंतर हमें इस बात की याद दिलाता है कि अतीत की भयावहता को कभी भी दोहराया नहीं जाना चाहिए. इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, संग्रहालय अपने संदेश को, संग्रहालय की दीवारों से परे ले जाने के लिए शिक्षा का एक आउटरीच कार्यक्रम चलाता है.

संग्रहालय उन लोगों की कहानियों, मौखिक इतिहास को रिकॉर्ड करता है जिन्होंने प्रलय को जिया और झेला था. ये कहानियाँ उन लोगों के बारे में बताती हैं जो कब्ज़े से बचने के लिए झोंपड़ियों, तहखानों और खाइयों में छिपे थे. यह उन बच्चों की दास्तां भी हैं जिन्होंने अपना घर, परिवार और सभी दोस्त खो दिए.

(संग्रहालय, जीवित बचे हुए लोगों के बारे में जानकारी एकत्र और प्रदर्शित करता है. वो बचे लोगों को सम्मानित करता है और उनके बीच संपर्क स्थापित करता है.)

1926 में हंगरी में पैदा हुए बार्ट स्टर्न ने समझाया, "यह एक बड़ा चमत्कार था कि मैं बच निकला ... मैं शवों के ढेर में छिपा हुआ था क्योंकि अंतिम सप्ताह में ... शमशान घाट बिल्कुल काम नहीं कर रहे थे." पोलैंड की चार्लेन शिफ ने बताया कि वो कैसे जंगलों में रहकर बचीं: "मैंने कीड़े-मकौड़े खाए. मैंने वो सब कुछ खाया जो मैं अपने मुंह में डाल पाई."

संग्रहालय की चलती-फिरती यात्रा प्रदर्शनी, प्रलय की कहानी को अन्य स्थानों तक पहुँचाने में मदद करती है. इन प्रस्तुतियों को लगभग 10-लाख लोगों ने देखा है. "बच्चों को याद रखें: डेनियल की कहानी" एक विशेष प्रदर्शनी है. "डेनियल की कहानी" में प्रलय के इतिहास को विशेष रूप से 8 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बच्चों के लिए डिज़ाइन किया गया है. यह प्रदर्शनी दर्शाती है कि नाजियों ने जर्मनी पर नियंत्रण करने के बाद कैसे एक यहूदी परिवार का जीवन बदला. जब नाज़ी सत्ता में आए तब क्या हुआ? कहानी को 11 वर्ष के लड़के डेनियल की नज़रों से बयां किया गया है.

शिक्षा, होलोकॉस्ट संग्रहालय का प्राथमिक कार्य है. वहां पर शिक्षकों के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिससे वे अपनी कक्षाओं में बच्चों को प्रलय जैसे विषयों से परिचित करा सकें.

संग्रहालय, भविष्य के अमेरिकी सैन्य अधिकारियों और कानून लागू करने वाले अधिकारियों को लोकतंत्र के संरक्षण में, उनकी भूमिका के बारे में शिक्षित करता है. विशेष कक्षाएं कैथोलिक स्कूल के शिक्षकों को होलोकॉस्ट के दौरान कैथोलिक चर्च की भूमिका के बारे में शिक्षित करती हैं. संग्रहालय, होलोकॉस्ट के इतिहास के बारे में एक साक्षरता और जागरूकता कार्यक्रम चलाता है.

(प्रदर्शनी के अलावा संग्रहालय यह एक शोध पुस्तकालय, दो थिएटर, एक कंप्यूटर सेंटर, कक्षाएं, एक स्मारक स्थान, और चर्चाओं के लिए विशेष कमरे हैं.)

संग्रहालय के लिए अतीत के नरसंहार की भयावहता की याद दिलाना ही पर्याप्त नहीं है. संग्रहालय द्वारा प्रायोजित सम्मेलन और कार्यक्रम, किसी भी स्थान पर कहीं भी सामूहिक हत्या को रोकने का काम करते हैं. 2004 में, अफ्रीका के सूडान में दारफुर के लोगों के लिए चिंता व्यक्त करने के लिए संग्रहालय ने वहां नरसंहार के बारे में जागरूकता फैलाई.

(2006 में, दारफुर और चाड के दृश्यों की तस्वीरों को संग्रहालय की बाहरी दीवार पर पेश किया गया, जिससे अफ्रीकी देशों में हो रही त्रासदियों पर लोगों का ध्यान आकर्षित हो.)

हर कोई वाशिंगटन, डी.सी. में होलोकॉस्ट संग्रहालय की यात्रा नहीं कर सकता है. लेकिन लोग संग्रहालय को ऑनलाइन अवश्य देख सकते हैं. संग्रहालय की वेब-साइट, ऑनलाइन लोगों को भी वही सामग्री उपलब्ध कराती है जो व्यक्तिगत रूप से आने वाले लोग देखते हैं. टेक्स्ट, फोटोग्राफ और वीडियो को वेब-साइट पर देखा जा सकता है.

यूनाइटेड स्टेट्स होलोकॉस्ट मेमोरियल संग्रहालय एक गहन और गतिशील सीखने का अनुभव प्रदान करता है. संग्रहालय एक शांत स्थान है. वो एक ईमानदार जगह भी है. संग्रहालय के समर्पण पर राष्ट्रपति क्लिंटन ने कहा, "होलोकॉस्ट हमें हमेशा याद दिलाता है कि ज्ञान जिसमें मूल्य न हों, केवल मानव दुःस्वप्न को गहरा करने का काम ही कर सकता है. कोई भी चिंतक, एक उदार दिल के बिना अच्छा इंसान नहीं बन सकता है."

होलोकॉस्ट संग्रहालय लोगों में यह उम्मीद जगाए रखने में मदद करता है कि लोग जहां भी रहें वे सभी लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए मिलकर काम कर सकते हैं.

क्या आपको पता था?

• अमेरिका के शहरों में लगभग 60 प्रलय संग्रहालय हैं.

• स्थायी संग्रह के 70 से अधिक वीडियो, संग्रहालय में आने वाले आगंतुकों को, प्रलय की कहानी बताते हैं.

• संग्रहालय में 12,000 से अधिक कलाकृतियां और ऐतिहासिक दस्तावेजों के 3 करोड़ 70 लाख पृष्ठ हैं.

• संग्रहालय की रजिस्ट्री में 59 देशों के 194,915 बचे लोगों और उनके परिवारों की सूची है.

• 8,700 से अधिक मौखिक इतिहास वीडियो-टेप, प्रलय के दौरान जो हुआ उसकी व्यक्तिगत कहानियों को संरक्षित करते हैं.

• संग्रहालय में, आगंतुक एक ऐसे मालगाड़ी के डिब्बे में से गुज़रते हैं जो कैदियों को यातना-शिविरों में ले जाती थी. वारसॉ यहूदी बस्ती से फ़र्श के पत्थरों की नकलें संग्रहालय के फर्श का हिस्सा हैं.

• यू.एस. होलोकॉस्ट मेमोरियल काउंसिल की सिफारिश के अनुसार, अमेरिका प्रत्येक वसंत में स्मरण दिवस पर पीड़ितों को सम्मानित करता है. तारीख हर साल बदलती है लेकिन वो हमेशा अप्रैल में ही होती है. कई देशों में 27 जनवरी, जिस दिन ऑशविट्ज़ को आज़ाद किया गया था, वो दिन "होलोकॉस्ट मेमोरियल दिवस" के रूप में मनाया जाता है.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1933 एडॉल्फ हिटलर को जर्मनी का चांसलर नियुक्त किया गया और पहला यातना-शिविर दचाऊ खोला गया.

1938 क्रिस्टलनाच्ट, "नाईट ऑफ ब्रोकन ग्लास", ऑस्ट्रिया, जर्मनी और अन्य नाजी-नियंत्रित क्षेत्रों में यहूदियों को आतंकित किया गया.

1939 1 सितंबर को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया.

1943 नाजियों के लिए "अंतिम हल" और अधिक जरूरी हो जाता है, और यहूदियों का सामूहिक विनाश किया जाता है; ऑशविट्ज़ को प्रमुख विनाश-शिविर चुना जाता है.

1944 सोवियत सैनिकों ने मजदानेक में यातना-शिविर को मुक्त किया.

1945 द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त.

1978 राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने एक समिति से अमरीका में एक उपयुक्त होलोकॉस्ट स्मारक की योजना बनाने के लिए कहा.

1985 यूनाइटेड स्टेट्स होलोकॉस्ट मेमोरियल म्यूजियम स्मारक की नींव रखी गई. एक समर्पण समारोह में संग्रहालय को खोला गया.